2 जून 2008, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

जैन
# पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

**सही दिशा में सक्रिय युवकों का सहयोग करना सभी समझदार लोगों का नैतिक दायित्व है।**

ह्न शाकाहार, पृष्ठ-1

वर्ष : 31, अंक : 05 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
जून (प्रथम), 2008 प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

## तीर्थधाम मंगलायतन में 42वें आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर का उद्घाटन समारोह हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न

**तीर्थधाम मंगलायतन (अलीगढ) :** यहाँ रविवार, 18 मई को पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित 18 दिवसीय आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर का उद्घाटन समारोह हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ।

समारोह की अध्यक्षता श्री हर्षवर्धनजी, औरंगाबाद ने की। इस प्रसंग पर प्रात:काल जिनेन्द्र शोभायात्रा निकाली गई, जिसमें पूरे हिन्दुस्तान से पधारे हुए युवक-युवतियों और साधर्मियों ने भाग लिया। श्रीजी को रथ में लेकर साथ चलने का सौभाग्य श्री पृथ्वीचन्दजी जैन को प्राप्त हुआ।

शोभायात्रा के पश्चात् श्री बाहुबली मंदिर में मधुर संगीत के साथ जिनेन्द्र पूजन की गई। मानस्तम्भ परिसर में श्री प्रदीपजी-तिलकजी चौधरी, किशनगढ के करकमलों से ध्वजारोहण का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

समारोह में पण्डित कैलाशचन्दजी अलीगढ़, डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली आदि विद्वान मंच पर विराजमान थे। मुख्यअतिथि के रूप में श्री जीवन्धरजी जैन गाजियाबाद, पण्डित सुनीलकुमारजी शास्त्री ग्वालियर, श्री महाचन्दजी सेठी इम्फाल, श्री जे.के. बोथरा, डॉ. प्रभातजी गाजियाबाद, श्री अजित जैन बडौदा, श्री अजित जैन दिल्ली एवं श्री मुकेश जैन इन्दौर मंचासीन थे।

कार्यक्रम का मंगलाचरण मंगलार्थी अभिषेक जैन सिहोर ने किया। मंगलाचरण के पश्चात् श्री स्वप्निल जैन अलीगढ, श्री अजित जैन बडौदा एवं श्री अजित जैन दिल्ली ने सभी महानुभावों का स्वागत किया।

इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में कहा कि अध्यात्म विद्या को संगमरमर के पत्थरों पर खुदवाकर सुरक्षित नहीं किया जा सकता; अपितु कोमलमति बालकों में तत्वज्ञान को प्रतिष्ठित करने पर ही जिनधर्म सुरक्षित रह सकता है।

अंत में श्री पवनजी जैन अलीगढ़ ने सभी महानुभावों को धन्यवाद ज्ञापित करते हुये कहा कि तीर्थधाम मंगलायतन पूरे विश्वभर में अध्यात्म का प्रचार तन-मन-धन के साथ निरन्तर करता रहेगा।

सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन पण्डित अशोकजी लुहाड़िया के निर्देशन में पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर ने किया।

## अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का 29वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन सम्पन्न

**मंगलायतन-अलीगढ** में दिनांक 25 मई, 08 को अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का 29वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन अनेक उपलब्धियों के साथ सम्पन्न हुआ।

अधिवेशन का आयोजन 2 सत्रों में किया गया। दोपहर के प्रथम सत्र की अध्यक्षता फैडरेशन के उपाध्यक्ष श्री मुकेशजी तन्मय विदिशा ने की, मुख्यअतिथि के रूप में श्री अजितजी जैन दिल्ली एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री आदीशजी जैन दिल्ली मंचासीन थे। इसके अतिरिक्त फैडरेशन की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्यगण, प्रान्तीय कार्यकारिणी के अध्यक्ष/मंत्री, सलाहकार एवं सभी विद्वत्गण भी मंचासीन थे।

रात्रिकालीन द्वितीय सत्र में अध्यक्ष के रूप में श्री स्वप्निलजी जैन मंचासीन थे। आपके अतिरिक्त पण्डित कैलाशचन्दजी जैन, डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल एवं अनेक विद्वान भी मंचासीन थे।

अधिवेशन के प्रथम सत्र में श्री देवेन्द्रजी बडकुल भोपाल, श्री नवनीतजी जैन मेरठ, श्री राकेशजी शास्त्री दिल्ली, श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर, श्री शांतिनाथजी खोत कोल्हापुर, श्री अरुणजी जैन भोपाल, पण्डित पुष्पेन्द्रकुमार जैन भिण्ड, श्री माधवप्रसाद शास्त्री शाहगढ, पण्डित विरागजी शास्त्री नागपुर, पण्डित प्रवेशजी शास्त्री करेली एवं पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट ने प्रतिनिधि के रूप में अपने-अपने क्षेत्रों में चल रही फैडरेशन की गतिविधियों, तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार की अनेक योजनाओं की जानकारी प्रस्तुत की।

फैडरेशन के राष्ट्रीय महामंत्री ने सभी वक्ताओं के विचार सुनने के उपरान्त सभी के वक्तव्य की समीक्षा करते हुये अपना उद्बोधन दिया। फैडरेशन के सलाहकार बोर्ड के सदस्य पण्डित अभयकुमारजी देवलाली, श्री पवनकुमारजी अलीगढ ने भी संगठन के नीति-निर्धारण के संबंध में महत्त्वपूर्ण सुझाव दिये।

**(शेष पृष्ठ-8 पर...)**

**श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में 3 से 12 अगस्त तक आयोजित शिविर में अवश्य पधारें।**

सम्पादकीय – 7

## चलते-फिरते सिद्धों से गुरु

ह्न पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

श्रोता परस्पर में कल के मुनिधर्म की महिमा पर हुए उपदेश की चर्चा कर ही रहे थे कि आचार्यश्री पधार गये और उपदेश प्रारंभ हुआ।

आचार्यश्री ने कुन्दकुन्द को श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हुए कहा ह्न

''देखो, आचार्य कुन्दकुन्द कहते हैं कि 'यदि चतुर्गति के दुःखों से मुक्त होने की इच्छा है तो श्रामण्य को अंगीकार करो, क्योंकि मुनि हुए बिना संसार के दुःखों से मुक्ति संभव ही नहीं है', परन्तु मैं कहता हूँ कि ह्न 'मुनि बनने के पहले मुनीम बनना जरूरी है। जिसतरह मुनीम को यह भेदज्ञान बराबर होता है कि सारी संपत्ति सेठ की है, मैं तो केवल वेतन का अधिकारी हूँ। भले ही वह व्यवहार में व्यापार के नफा-नुकसान को अपना कहता है, पर मानता यही है कि इससे मुझे क्या ? दूसरे, वह सही खतौनी करना जानता है। जिसका पैसा आता-जाता है, उसी के खाते में जमा-खर्च करता है। कभी गलत जमा-खर्च नहीं करता।

ठीक इसीप्रकार जो स्वाध्यायी श्रावक पर पदार्थों का स्वामी नहीं बनता, पर से भेदज्ञान कर पर को पर एवं निज को निज जानता है तथा सात तत्त्वों का यथार्थ स्वरूप पहचान कर एक तत्त्व को दूसरे में नहीं मिलाता। आस्रव को आस्रव ही जानता है। आस्रव को संवर नहीं मानता। जीव-अजीव को भिन्न-भिन्न जानता है। बंध व मोक्ष के कारणों में भूल नहीं करता। सही भेदज्ञान के बाद ही सही मुनिपना होता है। पहले जब सम्यग्दर्शन एवं सम्यग्ज्ञान हो जाता है, तब कहीं संसार, शरीर और भोगों से उदासीनता होती है, परिषहादि पर विजय प्राप्त करने की शक्ति प्रगट होती है, तभी व्यक्ति स्वयं मुनि होना चाहता है।

आचार्य कुन्दकुन्द और पद्मप्रभमलधारिदेव भी इसी बात को पुष्ट करते हुए कहते हैं कि ह्न 'साधु समस्त आरंभादि बाह्य व्यापार से मुक्त तथा चतुर्विध आराधना में सदा तत्पर एवं अनुरक्त रहते हैं।'

मुनिराजों की कुछ विशेषताएँ इसप्रकार हैं ह्न १. मुनिराज सकल संयमी होने से तथा परमपारिणामिकभाव की भावना से परिणत होने से समस्त बाह्य व्यापार से विमुक्त होते हैं। २. वे बाह्य-आभ्यन्तर-समस्त परिग्रह से रहित होने से ही निर्ग्रन्थ कहलाते हैं। ३. निज कारण परमात्मा के सम्यक् श्रद्धान-ज्ञान और सम्यक् आचरण के प्रतिपक्षी मिथ्यादर्शन-ज्ञान और मिथ्याचारित्र का अभाव होने से निर्मोही होते हैं।

आचार्य कुन्दकुन्द पुनः कहते हैं कि ह्न 'मुनिराज का बहिर्लिंग जन्मजात बालकवत् निर्विकार, सिर, दाढ़ी-मूंछ के बालों का लोंच किया हुआ अकिंचन हिंसादि से रहित और शारीरिक श्रृंगार से रहित होता है।'

श्रामण्य का अंतरंग लिंग मूर्छा (ममत्व) और आरंभ से रहित, एवं उपयोग और योग की शुद्धि से सहित तथा पर की अपेक्षा से रहित होता है।

पण्डित टोडरमलजी ने मोक्षमार्गप्रकाशक पृष्ठ-३ में साधु का सामान्य स्वरूप इस प्रकार लिखा है ह्न 'जो विरागी होकर, समस्त परिग्रह का त्याग करके, **शुद्धोपयोगरूप मुनिधर्म** अंगीकार करके ह्न अंतरंग में तो उस शुद्धोपयोग द्वारा अपने को आपरूप अनुभव करते हैं, परद्रव्य में अहंबुद्धि धारण नहीं करते, तथा अपने ज्ञानादिक स्वभाव ही को अपना मानते हैं, परभावों में ममत्व नहीं करते तथा जो परद्रव्य व उनके स्वभाव ज्ञान में प्रतिभासित होते हैं उन्हें जानते तो हैं परन्तु इष्ट-अनिष्ट मानकर उनमें राग-द्वेष नहीं करते, शरीर की अनेक अवस्थाएँ होती हैं, बाह्य नाना निमित्त बनते हैं, परन्तु वहाँ कुछ भी सुख-दुःख नहीं मानते; तथा अपने योग्य बाह्य क्रिया जैसे बनती हैं वैसे बनती हैं, खींचकर उनको नहीं करते; तथा अपने उपयोग को बहुत नहीं भ्रमाते हैं, उदासीन होकर निश्चलवृत्ति को धारण करते हैं; तथा कदाचित् मंदराग के उदय से शुभोपयोग भी होता है ह्न उससे जो शुद्धोपयोग के बाह्य साधन हैं उनमें अनुराग करते हैं, परन्तु उस रागभाव को हेय जानकर दूर करना चाहते हैं।'

पण्डित दौलतरामजी ने छहढाला की छठवीं ढाल में मुनिराज की शुद्धोपयोग दशा को इसप्रकार व्यक्त किया है ह्न

**'जिन परम पैनी सुबुधि छैनी, डारि अन्तर भेदिया।**
**वरणादि अरु रागादि तैं निज भाव को न्यारा किया।।**
**निज माँहि निज के हेतु निजकर, आपको आपै गह्यो।**
**गुण-गुणी ज्ञाता-ज्ञान-ज्ञेय मँझार कछु भेद न रह्यो।।८।।**
**जहँ ध्यान-ध्याता-ध्येय को न विकल्प, वचभेद न जहाँ।**
**चिद्भाव कर्म चिदेश करता, चेतना किरिया तहाँ।।**
**तीनों अभिन्न अखिन्न, शुध-उपयोग की निश्चल दशा।**
**प्रगटी जहाँ दृग ज्ञान-व्रत, ये तीनधा एकै लसा।।९।।**

जिन्होंने सुबुद्धिरूपी पैनी छैनी से वर्ण आदि और रागादि से अपने ज्ञानानन्दस्वभाव को भिन्न जान लिया है, दोनों से अपने आत्मा का भेदज्ञान कर लिया है एवं आत्मा में आत्मा के ही द्वारा अपने आत्मा में ही अपनापन ग्रहण कर लिया है तथा स्वयं ध्यान रूप होकर अभेद, अखंड और निर्विकल्प अनुभव कर लिया है। चैतन्यस्वभावी भगवान आत्मा स्वयं ही कर्ता, स्वयं ही कर्म और स्वयं ही क्रियारूप से परिणत होकर तीनों को अभिन्न, अक्षीण और शुद्धोपयोगरूप होकर निश्चलता प्राप्त कर ली है, वहाँ सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र भी अभेद एक रूप सुशोभित होने लगते हैं।'

मुनिराज नग्न तो होते ही हैं, उनमें और भी बाह्य अनेक विशेषताएँ होती हैं, जो इसप्रकार हैं ह्न

'मुनिधर्म की प्रारंभिक भूमिका में छठवें गुणस्थान के समय उन्हें अट्ठाईस मूलगुण पालन करने के जो शुभभाव होते हैं, उन्हें वे रागरूप होने से धर्म नहीं मानते तथा उन्हें उस काल में भी तीन कषाय चौकड़ी का अभाव होने से जितने अंश में वीतराग रूप शुद्ध परिणति वर्तती है, उतने अंश में ही वीतराग भावरूप धर्म होता है। उससे उनके कर्मों की निरन्तर निर्जरा होती रहती है।

पाँच महाव्रत, पाँच समिति, पाँच इन्द्रियरोध, छह आवश्यक, केशलोंच, अचेलपना, अस्नान, भूमिशयन, अदन्तधोवन, खड़े-खड़े आहार और एक बार आहार ह्न वास्तव में ये श्रमणों के मूलगुण हैं; उनमें प्रमत्त होता हुआ श्रमण छेदोपस्थापक होता है। **(क्रमशः)**

जन्मदिवस के अवसर पर –

# मंगलायतन तीर्थधाम ने दिया डॉ. भारिल्ल को सरप्राइज

दिनांक 25 मई, 2008 रविवार को जब डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल प्रवचनार्थ प्रवचन मण्डप में पहुँचे तो बिना किसी पूर्व घोषणा के मंगलायतन के कार्यकर्त्ताओं ने उन्हें जन्मदिवस की बधाइयाँ देना आरम्भ कर दिया तो जनसमुदाय आश्चर्यचकित हो उठा और यह जानकर कि आज डॉ. भारिल्ल का जन्मदिन है, बड़ी प्रसन्नता से आयोजन में सहभागी हो गया।

लगभग 1 घंटे 30 मिनट तक चले इस कार्यक्रम में डॉ. भारिल्ल को उनके उपस्थित सम्पूर्ण परिवार सहित मंच पर बिठाकर विविधप्रकार से उनका सम्मान किया गया। उनके सन्मान में लिखित गीत गाया गया और सुन्दरतमरूप में सुसज्जित कर उन्हें समर्पित किया गया। अनेक वक्ताओं ने उनके विविध आयामी व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला और अन्त में तीर्थधाम मंगलायतन के सर्वेसर्वा कर्मयोगी पवन जैन ने कहा –

'मुझे यहाँ ऐसा कोई नहीं दिखाई देता, जो डॉ. भारिल्ल का उपकार न मानता हो। इन्होंने सारे संसार को पढ़ाया है, मैं भी उनमें से एक हूँ। इन्होंने मुझे छहढाला पढ़ाई थी। ये भले ही जोर से न कहें, पर मैं कहता हूँ, मैं इनका शिष्य हूँ।

इनसे मैंने जब भी, जो भी निवेदन किया उसे इन्होंने सच्चे दिल से स्वीकार किया। आँखों की तकलीफ होने पर भी इन्होंने 1100 पृष्ठों के जिनागमसार के एक-एक पृष्ठ को बारीकी से देखा, आवश्यक करेक्शन कराये, सुझाव दिये। जिसके प्रत्येक पेज पर इनके साइन हैं, वह प्रति आज भी मेरे पास सुरक्षित है। जिनागमसार सही रूप में लोगों तक पहुँचाने का बहुत बड़ा श्रेय डॉ. भारिल्ल को जाता है। इसलिये हम इनका बहुत-बहुत आभार मानते हैं।

डॉ. भारिल्ल जो कुछ करते हैं, यहाँ तक कि उनके जिन कार्यों की आलोचना की जाती है, उन सहित उनके समस्त कार्यों के पीछे भी जिनधर्म, गुरुदेव और तत्त्व की प्रभावना ही है, अन्य कुछ नहीं।

ये पच्चीस बार अमेरिका होकर आये हैं, इन्होंने वहाँ पूज्य गुरुदेवश्री का तत्त्वज्ञान जन-जन तक पहुँचाया है, मैं इसका साक्षी हूँ।

तीर्थधाम मंगलायतन से डॉ. भारिल्ल उस समय से जुड़े हैं, जब मंगलायतन का शिलान्यास हुआ था।

मैंने किशनगढ़ पंचकल्याणक में डॉ. साहब से चर्चा की कि मुमुक्षुओं की सभी बड़ी संस्थाओं का एक-एक प्रतिनिधि ट्रस्टी के रूप में मंगलायतन में रहे। उन्होंने कहा क्या यह संभव है? मैंने कहा– क्यों नहीं। उनके प्रोत्साहन से मुझे बल मिला और आज लगभग सभी संस्थाओं के एक-एक ट्रस्टी हमारे ट्रस्ट में ट्रस्टी है।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट,जयपुर की ओर से परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, मुम्बई हमारे ट्रस्टी हैं। हम उनका स्वागत करते हैं।

बस अब आखिरी बात यह कह रहा हूँ कि डॉ. भारिल्ल! आप हम पर, मंगलायतन पर ऐसा ही प्रेम सदा बनाये रखें। हमारे दोषों पर हमारा मार्गदर्शन करते रहें। व्यवहार में कहा जाता है कि आप शतायु हों; परन्तु हमारी भावना है कि अब आगे हम सब आपका जन्मदिन नहीं, जन्मकल्याणक मनायें।'

अंत में डॉ. भारिल्ल ने उक्त संदर्भ में विचार व्यक्त करते हुए कहा–

"मुझे पता नहीं था कि यहाँ इतना आडम्बर होने जा रहा है। आप सभी ने मेरे प्रति जो वात्सल्य भाव प्रगट किया है, मेरा सम्मान किया है; वह उस तत्त्वज्ञान का सम्मान है कि जिसके आलोकन में, प्रचार-प्रसार में मैंने अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया है। उक्त चिन्तन के आधार पर ही मैं उक्त आभार के भार से उबर रहा हूँ।"

## राष्ट्रीय कार्यकारिणी की मीटिंग सम्पन्न

**तीर्थधाम मंगलायतन, अलीगढ :** यहाँ अ. भा. जैन युवा फैडरेशन के 29 वें राष्ट्रीय अधिवेशन के अवसर पर दिनांक 24 मई को अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्यों की मीटिंग डी. पी. एस., अलीगढ के लेंगवेज लैब में आयोजित की गई। इस मीटिंग की अध्यक्षता फैडरेशन के उपाध्यक्ष श्री मुकेशजी शास्त्री 'तन्मय' विदिशा ने की।

इसमें फैडरेशन की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के पदाधिकारियों श्री विजयकुमारजी बड़जात्या इन्दौर, मलूकचंदजी विदिशा, अभयकुमारजी टडैया ललितपुर, गणतंत्र शास्त्री बांसवाड़ा, पवनकुमारजी जैन किशनगढ़, धर्मेन्द्रजी शास्त्री, पीयूषजी शास्त्री, राजेशजी शास्त्री जयपुर, रितेशजी जैन इन्दौर, डॉ. शुद्धात्मप्रभाजी टडैया मुंबई, नवनीत जैन मेरठ, महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर, आदीशजी जैन दिल्ली, डॉ. उत्तमचन्दजी भारिल्ल अजमेर एवं शान्तिनाथजी खोत कोल्हापुर ने अपने विचार प्रस्तुत किये।

## प्रतिनिधियों की ओपन मीटिंग

**तीर्थधाम मंगलायतन, अलीगढ :** यहाँ अ. भा. जैन युवा फैडरेशन के 29 वें राष्ट्रीय अधिवेशन के अवसर पर दिनांक 24 मई की रात्रि में भगवान महावीर जिनालय में फैडरेशन के प्रान्तीय प्रतिनिधियों की ओपन मीटिंग सम्पन्न हुई, जिसमें श्री नंदकिशोरजी मांगुलकर काटोल, सुरेशचंदजी जैन देवनगर भिण्ड, डॉ. भरतजी जैन उज्जैन, देवेन्द्रजी बड़कुल भोपाल, मुकेशजी जैन मेरठ तथा जयकुमारजी जैन पिड़ावा ने अपने वक्तव्य प्रस्तुत किये।

## शाखाएँ व सदस्य पुरस्कृत

**तीर्थधाम मंगलायतन, अलीगढ :** यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के 29 वें राष्ट्रीय अधिवेशन में फैडरेशन के सदस्यों में से पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित प्रवेशकुमारजी शास्त्री करेली, पण्डित स्वप्निलजी शास्त्री नागपुर, पण्डित प्रसन्नजी शेटे कोल्हापुर, श्री नरेशजी सिंघई नागपुर, पण्डित जिनेन्द्रकुमारजी शास्त्री उदयपुर, डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित खेमचंदजी शास्त्री उदयपुर, श्री नीरजजी जैन दिलशाद गार्डन दिल्ली, पण्डित राकेशकुमारजी शास्त्री दिल्ली एवं श्री जितेन्द्रजी सोगानी भोपाल को विशिष्ट सेवाओं के लिये व्यक्तिगतरूप से पुरस्कृत किया गया।

विशिष्ट कार्य हेतु श्रेष्ठ शाखा पुरस्कार के लिये अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन की नागपुर, भिण्ड, अमरमऊ, बण्डाबेलई, बड़ामलहरा, शाहगढ एवं खतौली शाखा को भी पुरस्कृत किया गया।

सभी पुरस्कार डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित कैलाशचंदजी अलीगढ, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, पण्डित वीरेन्द्रजी आगरा एवं पण्डित अभयकुमारजी देवलाली के करकमलों से प्रदान किये गये।

## फैडरेशन का महाराष्ट्र प्रान्तीय अधिवेशन सम्पन्न

**नागपुर (महा.) :** यहाँ दिनांक 18 मई 2008 को नव निर्मित श्री वीतराग-विज्ञान भवन में ग्रुप शिविर के भव्य समापन समारोह के पश्चात् दोपहर में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का महाराष्ट्र प्रान्तीय अधिवेशन फैडरेशन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

इस प्रसंग पर महाराष्ट्र की विभिन्न शाखाओं से पधारे प्रतिनिधियों ने अपनी शाखा के माध्यम से हो रही तत्त्वप्रचार की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुये भावी प्रगति के लिये सुझाव दिये साथ ही इस कार्य में आने वाली समस्याओं को भी प्रस्तुत किया। ग्रुप शिविर के अवसर पर विभिन्न नगरों एवं ग्रामों में शिक्षण कराकर लौटे विद्वानों ने भी वहाँ की शाखाओं की गतिविधियों का परिचय कराया।

इस प्रसंग पर श्री नरेशकुमारजी सिंघई नागपुर, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, श्री विश्वलोचनजी जैनी नागपुर, पण्डित विपिजी शास्त्री श्योपुर, श्री गंगाधरजी महाजन वसमतनगर एवं मलकापुर व अन्य शाखाओं के प्रतिनिधियों ने अपने वक्तव्य प्रस्तुत किये।

पण्डित आलोकजी शास्त्री कारंजा एवं पण्डित नन्दकिशोरजी शास्त्री मांगुलकर काटोल ने अपने वक्तव्य में प्रतिनिधियों द्वारा बताई गई समस्याओं के समाधान प्रस्तुत किये।

फैडरेशन की नागपुर शाखा के अध्यक्ष श्री संदीपजी जैनी ने अपने उद्बोधन में कहा कि पाठशाला समाज की प्रारंभिक आवश्यकता है, जिससे संस्कारों की नीव मजबूत होती है; इसलिये प्रत्येक शाखा को अपनी गतिविधियों का प्रारंभ पाठशाला से करना चाहिये।

अध्यक्षीय भाषण में श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने कहा कि हमें अपने व्यक्तिगत मतभेदों को दूर रखकर फैडरेशन के संगठन को मजबूत बनाने का प्रयास करना चाहिये। उन्होंने आधुनिक संचार साधनों का लाभ उठाते हुये सभी शाखाओं में परस्पर सम्पर्क की आवश्यकता पर बल दिया तथा सभी सदस्यों से निवेदन किया कि अपने नये मोबाईल नं. व ई-मेल एड्रैस केन्द्रीय कार्यालय को उपलब्ध करायें।

इस प्रसंग पर डॉ. वासंती बेन मुम्बई, श्री विलासजी महाजन, श्री अशोकजी जैन नागपुर, श्री विनोदजी निरखे मलकापुर, श्री श्रुतेशजी सातपुते जयपुर, श्री स्वप्निलजी, श्री जितेन्द्रजी राठी नागपुर, श्री मनीषजी सिद्धान्त, श्री प्रवेशजी भारिल्ल, श्री प्रसन्नजी शेटे की उपस्थिति विशेष रही।

अधिवेशन के अवसर पर नागपुर शाखा के 50 एवं अन्य शाखाओं के 30 नवीन सदस्य बनें।

## हार्दिक बधाई

श्री श्रुतेशजी सातपुते को अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन की केन्द्रीय कार्यकारिणी में **महाराष्ट्र प्रान्त के प्रभारी** के रूप में मनोनीत किया गया है।

आप केन्द्रीय कार्यालय में रहकर महाराष्ट्र प्रान्त की शाखाओं एवं उनके पदाधिकारियों के बीच सम्पर्क का कार्य देखेंगे।

## विदर्भ के 22 स्थानों पर एक साथ बाल संस्कार ग्रुप शिविर सम्पन्न

**नागपुर :** अ. भा. जैन युवा फैडरेशन शाखा नागपुर की ओर से दिनांक 11 से 18 मई 2008 तक विदर्भ के लगभग 22 स्थानों पर एकसाथ बाल संस्कार ग्रुप शिविर का आयोजन किया गया।

इस प्रसंग पर शिविर के मुख्य केन्द्र नागपुर में नेहरु पुतला-इतवारी स्थित श्री महावीर स्वामी दि. जैन मन्दिर में ब्र. हेमचन्दजी 'हेम' देवलाली, पण्डित राकेशजी शास्त्री अलीगढ़, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित मनीषजी शास्त्री खड़ैरी, पण्डित प्रसन्नजी शेटे कोल्हापुर आदि द्वारा प्रात:, दोपहर एवं सायंकाल प्रवचन एवं प्रौढ कक्षा व बाल कक्षायें ली गई।

शिविर मूर्तिजापुर, हिंगणघाट, काटोल, आर्वी, नेर पिंगलई, बेनोडा, रामटेक, चंद्रपुर, वर्धा-रामनगर, देवली, शेंदाणा खुर्द, कोंढाली व गणेशपुर इत्यादि स्थानों पर आयोजित किया गया। इन सभी केन्द्रों पर श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के विद्वानों द्वारा प्रवचन व बाल कक्षाओं में अध्यापनादि कार्य किया गया।

इन विद्वानों में पण्डित नन्दकिशोरजी मांगुलकर शास्त्री काटोल, पण्डित विजयजी आह्वाने शास्त्री देऊलगांवराजा, पण्डित विनीतजी शास्त्री ग्वालियर, पण्डित प्रशान्तजी उखलकर गोवर्धन, पण्डित संदीपजी चौगुले व्हन्नूर, पण्डित अनुरागजी शास्त्री भगवां, पण्डित चिंतामणजी औरंगाबाद, पण्डित अक्षयजी वाडकर, पण्डित सूरजजी मगदूम, पण्डित संदेशजी बोरालकर हिंगोली, पण्डित जयेशजी रोकडे मालेगांव एवं मंगलार्थी पण्डित निकुंजजी सिंघई तथा पण्डित प्रवीणजी लोखंडे के अतिरिक्त नागपुर के स्थानीय विद्वान पण्डित मनोहरराव मारवडकर, पण्डित केशवरावजी जैन, श्रीमती स्वर्णलताजी, श्रीमती शकुनजी प्रमुख थे।

इसी प्रसंग पर नागपुर में नवनिर्मित श्री वीतराग-विज्ञान भवन में दिनांक 17 मई 2008 को आयोजित भव्य समारोह में श्री महावीर विद्या निकेतन का उद्घाटन श्री माणिकचन्द धारीवाल इण्डस्ट्रीज के डायरेक्टर श्री अजितजी जैन बडौदा द्वारा सम्पन्न हुआ। तथा दिनांक 18 मई 2008 को आयोजित शिविर के भव्य समापन समारोह के अन्तर्गत डॉ. वासन्तीबेन शाह मुम्बई द्वारा छात्रावास का उद्घाटन सम्पन्न हुआ।

## दशलक्षण महापर्व के सन्दर्भ में !

दशलक्षण महापर्व के अवसर पर पण्डित टोडरमल स्मारक की ओर से प्रवचनार्थ जानेवाले विद्वानों और आमंत्रण देनेवाले जिनमंदिरों, मण्डलों और युवा फैडरेशन की शाखाओं को हमने एक पत्र भेजा है। यदि वह आपको किसी कारणवश नहीं मिल पाया हो, तब भी हमारा आपसे निवेदन है कि आप अपना आमंत्रण-पत्र शीघ्र भेज दें, जिससे आपके यहाँ विद्वान भेजने की व्यवस्था की जा सके।

विद्वानों से निवेदन है कि वे इस वर्ष प्रवचनार्थ जाने की स्वीकृति का पत्र जितना जल्दी भेजेंगे, उन्हें उपयुक्त स्थान पर भेजने में हमें उतनी ही अधिक सुविधा रहेगी।

# संस्कार शिविर सम्पन्न

**इन्दौर (म.प्र.) :** श्री दिग. जैन कुन्दकुन्द परमागम ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। यह सप्तम शिविर दिनांक 8 मई से 15 मई, 2008 तक सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। प्रथम शिविर 350 विद्यार्थियों से प्रारंभ हुआ, जो आज फलता-फूलता 950 विद्यार्थियों तक पहुँच चुका है। इस वर्ष पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर से पधारे 19 विद्वानों का लाभ छात्र-छात्राओं को मिला।

इन्दौर नगर की विविध कॉलोनियों से प्रातः 6.30 बालक-बालिकायें साधना नगर स्थित पंच बालयति जिनालय पहुँचते थे। जहाँ पहुँचकर सभी बालकों द्वारा प्रतिदिन जिनेन्द्र-पूजन से दिन की शुरुआत की गई। फिर शिक्षण कक्षायें, सामूहिक कक्षा, सैद्धान्तिक कक्षा एवं खेलकूद के माध्यम से बालक-बालिकाओं को जैनदर्शन के व्यावहारिक एवं सैद्धान्तिक पक्ष का ज्ञान कराया गया।

सम्पूर्ण गतिविधि को पण्डित अशोकजी शास्त्री राघौगढ़ एवं पण्डित रीतेशकुमारजी शास्त्री, सनावद ने मूर्तरूप प्रदान किया।

बालकों को संस्कारित करने का कार्य पण्डित विक्रान्त पाटनी झालरापाटन, पण्डित अंचल शास्त्री ललितपुर, पण्डित अंकुर शास्त्री देवनगर, पण्डित विवेक शास्त्री पिड़ावा, पण्डित अर्पित शास्त्री बड़ामलहरा, पण्डित निपुण शास्त्री टीकमगढ़, पण्डित सचिन शास्त्री जवेरा, पण्डित अभिषेक शास्त्री केलवाड़ा, पण्डित सचिन शास्त्री गढ़ी, पण्डित वी. रमेश चिंजी, पण्डित सी. बाबू नल्लूर, पण्डित चैतन्य शास्त्री बकस्वाहा, पण्डित रवीन्द्र शास्त्री बसमतनगर, पण्डित तपिश शास्त्री उदयपुर, पण्डित अंकित शास्त्री लूणदा, पण्डित संदीप बड़कुल भिटोनी, पण्डित दीपक शास्त्री आलते एवं पण्डित नीतेश शास्त्री आरौन व श्रीमती शुचिता जैन ने किया।

इस अवसर पर पण्डित प्रवीणकुमारजी शास्त्री, जयपुर के प्रातः समयसार एवं सायं छहढाला (धन्य-मुनिदशा) पर हुए प्रवचनों का लाभ समाज को मिला। साथ ही लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका की प्रौढ कक्षा पण्डित अशोकजी शास्त्री राघौगढ़ ने की।

शिविर में विशेष विद्यार्थियों के अभिभावकों की मीटिंग एवं निमाड़ व मालवा क्षेत्र के फैडरेशन की नई गतिविधियों पर विचार-विमर्श हुआ।

बच्चों में जैन धर्म के मूलभूत सिद्धान्तों का ज्ञान कराने वाली पुस्तक जैन बालगीत का विमोचन हुआ, जिसमें जयघोष (नारे), गीत, भक्ति व भजनों का संकलन है।

सायंकाल सभी विद्वानों ने इन्दौर नगर की कॉलोनी एवं मन्दिरों में जाकर तत्त्वार्थसूत्र पर कक्षायें चलाई। ज्ञातव्य है कि इस वर्ष इन्दौर नगर एवं आसपास के शहरों में तत्त्वार्थसूत्र वर्ष मनाया जा रहा है।

15 मई, 2008 को सम्मान एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें प्रत्येक कक्षा में प्रथम-द्वितीय आने वाले छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत किया गया।

# बाल संस्कार शिविर एवं इन्द्रध्वज मण्डल विधान सानन्द सम्पन्न

**हिंगोली :** यहाँ महावीर भवन में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा हिंगोली द्वारा दिनांक 11 से 18 मई 2008 तक बाल संस्कार शिविर एवं इन्द्रध्वज मण्डल विधान का आयोजन किया गया।

इस प्रसंग पर प्रात: पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट के विधान के आधार से प्रवचन हुये। दोपहर में पण्डित किशोरजी शास्त्री बैंगलोर की सम्यग्दर्शन विषय पर प्रौढकक्षा चली। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के उपरान्त उक्त दोनों विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला । प्रवचनोपरान्त शिविर में अध्ययनरत छात्रों द्वारा विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये।

शिविर के अंतर्गत शिशु, बाल व किशोर ह्न इसप्रकार तीन वर्ग में विभाजित बालकों को बालपोथी, बालबोध पाठमाला एवं वीतराग-विज्ञान पाठमाला पाठ्यपुस्तकों के आधार से अध्यापन कराया गया। इस प्रसंग पर बालकों के 'व्यक्तित्व विकास' के विशेष वर्ग भी आयोजित किये गये।

बालकों के विविध वर्गों की कक्षायें पण्डित सुनीलजी एवं पण्डित किशोरजी के अतिरिक्त पण्डित पंकजजी दहातोंडे परली, पण्डित महेन्द्रजी मिरकुटे पानकनेरगांव, पण्डित विवेकजी शास्त्री दलपतपुर, पण्डित अभिषेकजी जोगी गजपंथा, पण्डित विशेषजी शास्त्री बड़ामलहरा, पण्डित गजेन्द्रजी शास्त्री भिण्डर, पण्डित अजयजी गोरे फालेगांव एवं पण्डित पंकजजी संघई हिंगोली द्वारा चलाई गई ।

इस अवसर पर आयोजित इन्द्रध्वज महामण्डल विधान संबंधी सभी कार्य पण्डित सुनीलजी जैनापुर एवं पण्डित किशारेजी शास्त्री ने सम्पन्न कराये। स्थानीय वयोवृद्ध विद्वान पण्डित जयकुमारजी दोडल, पण्डित पद्माकरजी दोडल, पण्डित फूलचन्दजी मुक्कीरवार तथा श्री सुदर्शनजी दोडल व श्री अरविंदजी कंदी के निर्देशन व नेतृत्त्व में ये सभी कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

इस प्रसंग पर 376 स्थानीय बालकों एवं लगभग 1000 साधर्मी भाई-बहनों ने शिविर के माध्यम से धर्मलाभ लिया तथा आगामी वर्ष में इसीप्रकार आयोजित होनेवाले शिविर के लिए आयोजनकर्त्ताओं व मण्डल विधान में 25 इन्द्रों की स्वीकृति भी प्राप्त हुई। **ह्न अध्यक्ष, युवा फैडरेशन, हिंगोली**

# व्याख्यानमाला एवं बाल शिविर सम्पन्न

**चिंतामणी (गुज.) :** यहाँ श्री दि. जैन अतिशय क्षेत्र श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ में दिनांक 9 मई से 15 मई तक आध्यात्मिक व्याख्यानमाला एवं बाल शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में प्रतिदिन प्रात: पण्डित अश्विनभाई मलाड एवं पण्डित रजनीभाई हिम्मतनगर के प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही पण्डित विरागजी शास्त्री द्वारा जैन सिद्धान्त प्रवेशिका, पण्डित मनीषजी शास्त्री रहली द्वारा तत्त्वार्थसूत्र तथा पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ द्वारा 'हमारे गौरव' विषय पर कक्षायें ली गई। शिशु वर्ग की कक्षा पण्डित दर्शनशाह ने ली।

इस प्रसंग पर पण्डित बाबूभाई मेहता फतेपुर, पण्डित शैलेषभाई शाह तलौद एवं पण्डित जिनचन्दजी हेरले के व्याख्यानों का लाभ भी मिला।

इस अवसर पर प्रात: श्री सिद्धपरमेष्ठी मण्डल विधान का आयोजन हुआ तथा रात्रि में विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

# जिनवाणी की सुरक्षा का उपाय

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल, जयपुर

**श्रुतपंचमी पर्व जिनवाणी की सुरक्षा का पर्व है। महागिरि गिरनार की गहरी गुफा में अन्तर्मग्न आचार्य धरसेन का ध्यान रात्रि के अन्तिम प्रहर में भग्न हुआ तो वे श्रुतपरम्परा की सुरक्षा के विकल्प से उद्विग्न हो उठे। वे सोचने लगे कि बुद्धि के निरन्तर ह्रास के कारण भगवान महावीर की श्रुतपरम्परा अब केवल सुनकर सीखने के आधार पर नहीं चल सकती; अतः अब उसे लिपिबद्ध करना अनिवार्य हो गया है।**

**तदनुसार उन्होंने अपने योग्यतम शिष्यों को आदेश दिया कि तुम इसे लिपिबद्ध करो और उनके आदेश की पालना करते हुये आचार्य पुष्पदन्त और भूतबली ने आज से लगभग दो हजार वर्ष पहले ग्रन्थराज षट्खण्डागम की रचना की। ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी के दिन ही इस श्रेष्ठतम षट्खण्डागमरूप प्रथम श्रुतस्कन्ध का अवतार हुआ था। इसी उपलक्ष्य में यह दिन श्रुतपंचमी पर्व के रूप में प्रचलित हुआ है।**

**इसीलिये मैं कहता हूँ कि यह श्रुतपंचमी पर्व जिनवाणी की सुरक्षा का महान पर्व है।**

लगभग उसी के आस–पास समर्थ आचार्य कुन्दकुन्ददेव द्वारा परमागमरूप द्वितीय श्रुतस्कन्ध की रचना हुई। उसके बाद तो ऐसा सिलसिला आरंभ हुआ कि अनेकानेक महान सन्तों द्वारा हजारों ग्रन्थ लिखे गये, ग्रन्थों के अम्बार लगने लगे; किन्तु समुचित सुरक्षा के अभाव में बहुत कुछ तो कालकवलित हो गये, कुछ विरोधियों द्वारा नष्ट–भ्रष्ट कर दिये गये; परन्तु आज भी हमारे पास अनेकानेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थराज सुरक्षित हैं, मुद्रण के इस युग में सभी को सहज भाव से उपलब्ध हैं, आत्मकल्याण के लिए पर्याप्त हैं और उनमें भगवान महावीर की वाणी का मूल सुरक्षित है।

जो भी हो; जो हो गया, सो हो गया; पर आज हमें जो भी ग्रन्थ उपलब्ध हैं, उनकी सुरक्षा का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व हमारा है। जिसे न केवल हमें स्वीकार ही करना है, अपितु प्राणपण से निभाना भी है। लोक में जब यह कहा जाता है कि **जिम्मेवारी किसकी?** तो इसके उत्तर में यही तो कहा जाता है कि ह्न **जो अनुभव करे, उसकी।**

अतः आज हमारे चिन्तन का मूल विषय यही है कि आखिर हम अपनी अद्भुत निधिरूप श्रुतपरम्परा की सुरक्षा करें तो करें कैसे?

एक सहज और सरल उपाय तो यह हो सकता है कि हम उसे ताम्रपत्रों पर लिखाकर जमीन में गाड़ दें, संगमरमर के पाटियों पर उत्कीर्ण कराके जिनमंदिरों और स्वाध्याय भवनों की दीवालों पर जड़ दें, विभिन्न भाषाओं और लिपियों में मुद्रित कराके लाखों की संख्या में विश्व के कोने–कोने में पहुँचा दें।

यद्यपि इस दिशा में हम बहुत कुछ सक्रिय भी हैं; तथापि जिस रूप में और जिस मात्रा में हमारी सक्रियता है; वह पर्याप्त नहीं है, ऊँट के मुँह में जीरे के समान ही है।

जो कुछ भी हो; पर इससे इतना तो हुआ ही है कि हमारी यह अमूल्य निधि आज भी बहुत–कुछ सुरक्षित है। ताम्रपत्रों पर लिखकर जमीन में गाड़ देने की उपयोगिता मात्र इतनी ही है कि जब प्राकृतिक प्रकोप से प्रलय जैसी स्थिति उत्पन्न हो और सभी शास्त्रभंडार स्वाहा हो जावें; तब भी यदि कभी खुदाई में वे ताम्रपत्र हमारे सद्भाग्य से किसी को प्राप्त हो जाये तो हमारी निधि पुनर्जीवित हो सकती है।

इसीप्रकार संगमरमर के पाटिये पर लिखाने का लाभ भी मात्र इतना ही है कि लिपिबद्ध या मुद्रित शास्त्रों की आयु भी सीमित ही है; प्राकृतिक आक्रमणों और आतंकवादियों के विध्वंस से उनका विनाश होने पर संगमरमर के पाटियों से लेकर उन्हें दुबारा लिखाया जा सकता है, छपाया जा सकता है। इससे अधिक उनकी कोई उपयोगिता नहीं; क्योंकि मंदिरों में खड़े–खड़े या चलते हुए उनका स्वाध्याय करना संभव नहीं है।

आजतक किसी को भी उनका इसप्रकार स्वाध्याय करते हुए नहीं देखा गया है। वे तो मात्र दर्शन और प्रदर्शन की वस्तु बनकर ही रह जाते हैं।

शास्त्रों को विभिन्न भाषाओं में अनुवाद कराके विभिन्न लिपियों में मुद्रित कराके विभिन्न देशों और देश के कोने–कोने में पहुँचा देने का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण लाभ यह है कि भगवान महावीर की यह वाणी–जिनवाणी देश–विदेश में विभिन्न भाषावासियों को सहज उपलब्ध रहेगी; अनेकानेक लोग स्वाध्याय कर इसका लाभ उठा सकेंगे, उठायेंगे और उठा भी रहे हैं।

एक क्षेत्र में, एक भाषा में सीमित रहने पर सबसे बड़ा खतरा यह है कि यदि उस क्षेत्र में बाढ आ गई, सुनामी आ गई, आग लग गई, तूफान आ गया और सम्पूर्ण साहित्य उसकी भेंट चढ गया तो फिर सब–कुछ समाप्त ही समझो; किन्तु यदि वह सम्पूर्ण विश्व के लगभग सभी देशों में, सभी भाषाओं में उपलब्ध रहे तो फिर कोई खतरा नहीं है; क्योंकि सभी देशों और सभी भाषाभासियों का एक साथ सर्व विनाश तो संभव नहीं है। कदाचित् ऐसा हो भी गया तो हम जिनवाणी बचाकर भी क्या करेंगे; क्योंकि तब तो उसे पढने वाला भी कोई नहीं रहेगा।

यह तो आप जानते ही हैं कि '**बारह कोस में पानी बदले और बारह वर्ष में वाणी**'। भाषा में भी निरन्तर परिवर्तन होते रहते हैं और सौ वर्ष में तो भाषा का कायाकल्प हो जाता है, उसमें आमूलचूल परिवर्तन हो जाता है। ऐसी स्थिति में यदि भगवान महावीर की वाणी को जन–जन तक पहुँचाना है तो उसे भी निरन्तर युग के अनुरूप भाषा और शैली में ढालना होगा।

यदि आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजी स्वामी कुन्दकुन्द की वाणी को आजकल की चालू गुजराती भाषा में प्रस्तुत नहीं करते तो क्या संस्कृत

और प्राकृत भाषा से पूर्णत: अपरिचित व्यापारी गुजराती समाज कुन्दकुन्द वाणी का रहस्य समझ सकती थी ? नहीं, कदापि नहीं; तो फिर हमारा भी यह कर्तव्य हो जाता है कि हम उनकी वाणी को हिन्दी, मराठी, अंग्रेजी आदि अनेकानेक भाषाओं में अनूदित कर सम्पूर्ण विश्व के कोने–कोने में पहुँचाने का महान कार्य करें।

न केवल कानजी स्वामी की वाणी को, अपितु कुन्दकुन्दाचार्य आदि सभी सन्तों, पंडित टोडरमलजी जैसे सभी तलस्पर्शी विद्वानों का सत्साहित्य आधुनिकतम शैली और वर्तमानकालीन भाषा में जन–जन तक पहुँचाने का महान कार्य हमें करना है।

इसके बिना जिनवाणी की सुरक्षा संभव नहीं है। ध्यान रहे अकेले संगमरमर के पाटियों पर जड़ाने से हमारे कर्तव्य की इतिश्री नहीं हो जाती।

हम अपने गिरेबान में झांककर देखें कि हम जिनवाणी को जन–जन तक पहुँचाने की दिशा में कितना प्रयास कर रहे हैं ? यदि हमसे कुछ नहीं बनता, हमें पढना–पढाना नहीं आता, लिखना–लिखाना नहीं आता और इसे जन–जन तक पहुँचाने में भी कोई रस नहीं है तो कम से कम इस महान कार्य में लगे लोगों की अनुमोदना करके ही पुण्य कमा लें; विरोध करके, अरुचि दिखाकर जिनवाणी के विनाश का महान अपराध तो न करें।

यदि प्राकृत–संस्कृत में निबद्ध जिनवाणी को पढनेवाले ही नहीं रहे तो क्या होगा ताम्रपत्रों और संगमरमर के पाटियों से ? जिनवाणी सुरक्षा का महान कार्य तो चेतन बालकों की चित्तभूमि पर जिनवाणी को उत्कीर्ण करने से होगा और यह सब इतना आसान नहीं है कि जितना ताम्रपत्र और संगमरमर के पाटियों पर लिखाना है; क्योंकि उसमें ज्ञान–ध्यान का तो काम ही नहीं है; बस वह सब तो मात्र पैसों का खेल है।

उसमें सम्पूर्ण कार्य धातु और पत्थरों पर होना है और बिना पढे–लिखे कारीगरों को करना है; पर इसमें सब–कुछ चेतन पर होना है, चेतन बालकों की चित्तभूमि पर जैनदर्शन के विशेषज्ञ विद्वानों द्वारा किया जाना है। अत: इसमें एक तो कच्चा माल मिलना कठिन है और दूसरे उन्हें गढने वाले सुयोग्य विद्वानों का मिलना भी तो सहज नहीं है। पल्लवग्राही पाण्डित्य के धनी वाचाल विद्वान तो गली–गली में प्राप्त हो जावेंगे; पर जैनतत्त्वज्ञान की गहराई तक पकड़ रखनेवाले आध्यात्मिक रुचि सम्पन्न और इस महान कार्य में जीवन समर्पण करनेवाले विद्वानों का उपलब्ध होना तो असंभव जैसा ही है।

ताम्रपत्रों और संगमरमर के पाटियों की आयु तो हजारों वर्ष हो सकती है; लिपिबद्ध और मुद्रित शास्त्र भी सैंकड़ों वर्षों तक सुरक्षित रह सकते हैं; पर विद्वानों के तैयार होने में ही आधी उमर बीत जाती है, जबतक उन्हें ऐसी प्रतिष्ठा प्राप्त होती है कि समाज उनकी बात सुने, उनके द्वारा लिखित साहित्य को पढ़े; तब तक उनके बाल सफेद हो चुके होते हैं, वे अनेक बीमारियों की चपेट में आ चुके होते हैं और उन्हें अगले भव में जाने की तैयारी में जुट जाना पड़ता है। कितना अस्थिर है यह प्रयास।

यदि हमें जिनवाणी की सुरक्षा करनी है तो हमें ऐसे प्रतिभाशाली छात्रों की खोज करनी होगी, जो पूरी तरह समर्पित होकर जिनागम का गहरा अध्ययन करें, अपने जीवन को अन्य व्यापारादि कार्यों में ही बर्बाद करने के लिये उत्सुक न हो, पूरा जीवन जिनागम की सेवा में ही समर्पित करदें। फिर उन्हें घड़े सम घड़ने वाले समर्थ गुरुओं को जुटाना होगा।

यदि यह पढ़ने–पढ़ाने का काम निर्विघ्न कुछ काल तक चलता रहा तो जो भी विद्वान तैयार होंगे, उनमें सैकड़ों में एक विद्वान इस काम के लिये समर्पित होता है, हजार में एक वक्ता होता है और दस हजार में एक लेखक होता है। इसलिये यह प्रक्रिया निरंतर चलते रहना अत्यंत आवश्यक है।

कितना श्रमसाध्य है यह कार्य ह्न इसका आभास हमें नहीं है, इसकी महिमा हमें नहीं है; यही कारण है कि यह जिनवाणी माता आज असुरक्षा के घेरे में है।

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के प्रभावनायोग से आज हम इस स्थिति में हैं कि इस दिशा में कुछ कर सकें। उनके मंगल आशीर्वाद से हमने श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर की छत के नीचे बैठकर इस दिशा में कुछ प्रयास आरंभ किये थे, जो सभी के सहयोग से आज परवान चढ़ रहे हैं। जैनदर्शन के पाँच सौ से अधिक ठोस विद्वान तैयार हुये हैं, 400 वीतराग–विज्ञान पाठशालाओं के माध्यम से 4,43,319 छात्रों ने जैन तत्त्वज्ञान को सीखने के साथ–साथ सदाचार सम्बंधी संस्कार प्राप्त किये हैं, करोड़ों की संख्या में सत्साहित्य घर–घर पहुँचा है ।

सत्साहित्य में जहाँ एक ओर कुन्दकुन्दाचार्य आदि आचार्यों के साथ–साथ पण्डित टोडरमल जैसे विद्वानों के साहित्य को लाखों की संख्या में घर–घर पहुँचाया गया है; वहीं दूसरी ओर उनकी सरल भाषा में टीकायें, उनके अनुशीलन और उनके सार को जन–जन तक पहुँचाया है।

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के प्रवचनों के दस हजार से भी अधिक पृष्ठों को लाखों की संख्या में सत्तर करोड़ लोगों की भाषा राष्ट्रभाषा हिन्दी बोलने वाले लोगों तक पहुँचाया है।

क्रमबद्धपर्याय, धर्म के दशलक्षण, परमभावप्रकाशक नयचक्र जैसी मौलिक कृतियों के माध्यम से जो क्रान्ति की है, उसने लाखों लोगों को आन्दोलित किया है।

हम समझते हैं कि हमने अपनी शक्ति के अनुसार अपना उत्तरदायित्व बखूबी निभाया हैऔर न केवल स्वामीजी के मिशन को अपितु कुन्दकुन्दाचार्यादि आदि आचार्यों, पण्डित टोडरमलजी जैसे विद्वानों के कार्य को भी कुछ न कुछ आगे बढ़ाया है और हमें पक्का विश्वास है कि आगे भी हमारे यहाँ तैयार हुये विद्वान इस कार्य को तेजी से आगे बढ़ायेंगे।

हम जानते हैं कि हमारा यह प्रयास ऊँट के मुँह में जीरे के समान ही है; अत: इस प्रयास को और आगे बढ़ाया जाना चाहिये।

जिनवाणी की सुरक्षा की भावना रखनेवाले आत्मार्थी भाई–बहिनों से इस श्रुतपंचमी पर्व के अवसर पर हम अनुरोध करना चाहते हैं कि धर्म के नाम पर अन्य व्यर्थ के कार्यों में अपनी शक्ति न लगाकर अपनी सम्पूर्ण शक्ति को इस दिशा में समर्पित करें, समय और शक्ति का अपव्यय न करें।

2 जून 2008, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

## पवन जैन कर्मयोगी की उपाधि से अलंकृत

**तीर्थधाम मंगलायतन (अलीगढ़) :** यहाँ 18 दिवसीय 42वें शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर के दौरान दिनांक 25 मई, 2008 को रात्रि में पण्डित कैलाशचन्दजी, पवनकुमारजी जैन अलीगढ़ एवं उनके पूरे परिवार का पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा हार्दिक अभिनन्दन किया गया।

इस अवसर पर आपका प्रशस्ति-पत्र के साथ श्रीफल, माल्यार्पण एवं शॉल ओढाकर अभिनन्दन किया गया।

इस प्रसंग पर डॉ. भारिल्ल ने उनके संबंध में अपने उद्बोधन में कहा कि पण्डित कैलाशचन्दजी के हृदय में गुरुदेवश्री कानजीस्वामी द्वारा समझाया गया तत्त्वज्ञान कूट-कूट कर भरा हुआ है और उनके सुपुत्र श्री पवनकुमारजी ने न केवल मंगलायतन तीर्थधाम का निर्माण किया; अपितु वे उसके माध्यम से गुरुदेवश्री के प्रति अपार श्रद्धा के साथ तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में पूरी निष्ठा से लगे हुये हैं।

युवा फैडरेशन के राष्ट्रीय महामंत्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने पण्डित कैलाशचन्दजी के आध्यात्मिक जीवन एवं पवनकुमारजी के कर्मठ जीवन के अनेक पहलुओं पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर श्री पवनकुमारजी को **कर्मयोगी** की उपाधि से अलंकृत किया गया।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया।

## वैराग्य समाचार

श्री टोडरमल दिगंबर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय जयपुर के अधीक्षक श्री धर्मेन्द्रजी शास्त्री की दादीजी **श्रीमती चम्पाबाई सिंघई बण्डा** (सागर) का दिनांक 24 मई 2008 को प्रात: 73 वर्ष की आयु में शांत परिणामों से देहावसान हो गया है। आप गहन तत्त्वाभ्यासी एवं स्वाध्यायी महिला थीं।

दिवंगत आत्मा शीघ्र ही चतुर्गति के दु:खों से छूटकर मुक्ति की प्राप्ति करे ह्न यही मंगल भावना है। **ह्न प्रबंध सम्पादक**


## स्लिपडिस्क रोगी ध्यान दें !

सम्पूर्ण उपचार बिना दवा, बिना कसरत, बिना चीरफाड, बिना आराम किए विश्व की नवीनतम तकनीक माइक्रो एक्यूप्रेशर द्वारा शीघ्र उपचार।

**डॉ. पीयूष त्रिवेदी** (मो.) 09828011871

गोल्ड मेडलिस्ट, बी.ए. एम.एस., एम.डी. (एक्यू.)

डिप्लोमा इन योगा, सुजोक (मास्को) एफ.ए.आर.सी. एस. (लंदन)

मेडिनोवा पोली क्लीनिक, केसरगढ, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर

**समय :** सायं 6 बजे से 9 बजे तक, रविवार को प्रात: 8 से 12 बजे तक

**नोट –** एक्यूप्रेशर सेवा समिति द्वारा 300 से अधिक नि:शुल्क शिविर आयोजित।

अन्य रोग : जोडों का दर्द, गर्दन का दर्द, मोटापा, मायोपैथी, मानस विकृतियां, मधुमेह तथा उच्च रक्तचाप आदि की सफल चिकित्सा।


## कहाँ और कब से ?

जो जिनमन्दिर, मुमुक्षु मण्डल और युवा फैडरेशन की शाखायें अपने यहाँ डॉ. भारिल्ल कृत **परमभाव प्रकाशक नयचक्र** कक्षा के रूप में आरम्भ करना चाहते हैं; प्रबुध्द श्रोताओं के हाथ में भी उक्त ग्रन्थ रहें - इस भावना से पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट उन्हें उक्त ग्रन्थ की प्रतियाँ ससम्मान भेंट करना चाहता है।

आप कहाँ (स्थान) और कब (दिनांक) से कक्षा/स्वाध्याय आरम्भ करेंगे ह्न इस जानकारी के साथ तत्काल लिखें अथवा सूचित करें, जिससे आपको समय के पूर्व ही ग्रन्थ उपलब्ध कराये जा सकें।

**ह्न प्रचार विभाग,** पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर (राजस्थान) 302015, फोन : (0141) 2705581, 707458, ई-मेल : ptstjaipur@yahoo.com

**(पृष्ठ-1 का शेष...)**

राष्ट्रीय मंत्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में फैडरेशन की शाखाओं को सदस्यता अभियान प्रारंभ करने का आह्वान किया। फैडरेशन के निर्देशक मंडल के अध्यक्ष डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने भी सभा को अपना महत्त्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान किया।

अधिवेशन की अध्यक्षता कर रहे श्री मुकेशकुमारजी ने सभी सदस्यों को उनके द्वारा चलाई जा रही गतिविधियों के लिये साधुवाद दिया और अब युवा फैडरेशन के कार्य में जोर-शोर से जुट जाने के लिये आह्वान किया।

पण्डित गणतंत्रजी जैन बांसवाडा ने काव्यपाठ प्रस्तुत किया एवं मंगलाचरण श्रीमती ज्योति जैन ने किया। अंत में फैडरेशन के राष्ट्रीय गीत मैं ज्ञानानन्द स्वाभावी हूँ के गानपूर्वक सभा का विसर्जन हुआ।

अधिवेशन के दूसरे सत्र में फैडरेशन की शाखाओं व उनके कार्यकर्ताओं को उनकी उपलब्धियों के लिये पुरस्कृत किया गया।

अधिवेशन के दोनों सत्रों का संचालन संगठन मंत्री पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री जयपुर ने किया। ●

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा,** डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

*यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -*
ए- ४ बापूनगर, जयपुर - ३०२०१५ (राज.)
**फोन :** (०१४१) २७०५५८१, २७०७४५८
**फैक्स :** (०१४१) २७०४१२७